माना तलाक का आधार

हाईकोर्ट ने अपने फैसले में साफ–साफ कहा कि देश का कानून भले वैवाहिक संबंधों में होने वाले बलात्कार को अपराध नहीं मानता, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कोर्ट पति के ऐसे व्यवहार की क्रूरता को तलाक का आधार नहीं बता सकता।

मोहन वर्मा।।

केरल हाईकोर्ट का हाल में दिया गया यह फैसला बेहद अहम है कि मैरिटल रेप तलाक का मजबूत आधार बनता है। इसी आधार पर हाईकोर्ट ने तलाक की इजाजत दिए जाने के निचली अदालत के आदेश को खारिज करने की पति की अपील नामंजूर कर दी। हाईकोर्ट ने अपने फैसले में साफ–साफ कहा कि देश का कानून भले वैवाहिक संबंधों में होने वाले बलात्कार को अपराध नहीं मानता, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कोर्ट पति के ऐसे व्यवहार की क्रूरता को तलाक का आधार नहीं बता सकता। भारतीय समाज के एक बड़े हिस्से में आज भी पत्नी के शरीर पर पति का हक माना जाता है। इसी कथित हक के बिना पर लोग अक्सर मान लेते हैं कि उन्हें पत्नी के साथ उसकी मर्जी के बगैर भी सेक्स करने का अधिकार है। हाईकोर्ट ने बिल्कुल ठीक कहा कि आधुनिक सामाजिक न्यायशास्त्र में पति और पत्नी को समान हैसियत का पार्टनर माना जाता है और पति किसी भी रूप में पत्नी पर अपनी मर्जी थोपना अपना अधिकार नहीं मान सकता। कोर्ट ने एक और महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए कहा कि समय आ गया है जब शादी और तलाक जैसे मामलों को सेकुलर कानूनों के दायरे में लाना चाहिए। लोग चाहें तो पर्सनल कानूनों के तहत शादी जरूर करें लेकिन उन्हें सेकुलर कानूनों के तहत स्थापित वैवाहिक दायित्वों का निर्वाह करने की अनिवार्यता से छूट नहीं दी जा सकती।

इसी संदर्भ में यह सवाल भी उठता है कि आखिर देश के कानूनों को मैरिटल रेप की अनदेखी करने की छूट कब तक मिली रहेगी। आंकड़े बताते हैं कि देश में शादी के अनुभव से गुजरने वाली 15 से 49 साल के बीच की हर तीन में से एक महिला पति के द्वारा हिंसा का शिकार होने की बात कहती है। दुनिया में सिर्फ 36 देश ऐसे हैं, जहां मैरिटल रेप को कानूनन अपराध नहीं माना जाता।

भारत के कानून अंग्रेजों के बनाए हुए बताए जाते हैं, लेकिन ब्रिटेन में भी तीन दशक पहले यह तय हो चुका है कि पति द्वारा पत्नी का रेप करना अपराध है। हालांकि अपने देश में यह आशंका निराधार नहीं है कि ऐसा कानूनी प्रावधान हो जाए तो इसका बड़े पैमाने पर दुरुपयोग शुरू हो सकता है। लेकिन संभावित दुरुपयोग को रोकने की व्यवस्था कानून में ही कुछ विशेष प्रावधान जोड़कर की जा सकती है। ऐसे मामलों में गिरफ्तारी को कठिन बनाया जा सकता है। पहले इस मान्यता को कानूनी तौर पर स्थापित तो किया जाए कि शादी हो जाने का मतलब यह नहीं है कि एक को दूसरे के साथ जबर्दस्ती करने का लाइसेंस मिल गया है। कानून का यह दायित्व है कि वह वैवाहिक रिश्ते में होते हुए भी पीड़ित पक्ष को संरक्षण दे। उसे इस जिम्मेदारी से महज इस आधार पर मुक्त नहीं किया जा सकता कि भारत में शादी को जन्म–जन्मांतर का रिश्ता माना जाता है।

शक्तिहीन

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। राम को रोकते हुए कहा – राम ब्रह्मास्त्र को वापस तूणीर में रखिए। हनुमान के अविनय को मैंने क्षमा किया। इतना सुनते ही हनुमान को जैसे जीवनदान मिला। राम को धर्म–संकट से मुक्ति मिली। सब लोग प्रसन्न हुए।

हनुमान ने आकर विश्वामित्र से क्षमा मांगी और नारद जी की और देखा। नारद ने हंस कर कहा – प्रभु इसका कारण मैं हूँ। मैं कहा था ना भगवान से बढ़कर भगवान का नाम–जपना श्रेष्ठ है। उसे प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिया। हनुमान ने इष्ट देव भगवान राम के नाम के बीज–मन्त्र से भगवान की शक्ति क्षीण कर दी। जिस प्रभु के नाम का जप होता है, वह प्रभु अपने नाम–जाप की शक्ति के आगे शक्तिहीन हो जाते हैं।

इसलिए कहता हूँ कि नामी से नाम बड़ा। यह कहकर नारद देवलोक को चले गए।

संपादकीय

प्रॉफिट बुकिंग करें

अगर बाजार धड़ाम होता है तो एक बार हाहाकार मचेगा ही। लेकिन वैसे में एक बात याद रखनी होगी कि गिरावट हमेशा फिर से तेजी की नींव तैयार भी करती है। उस हालत में अपने शेयरों को बेचकर निकल जाना बेवकूफी होगी क्योंकि हमने पहले भी देखा है कि बाजार कई बार गिरे और फिर उठकर चल पडे। थोड़ा इंतजार तो बनता ही है। अगर आप सोच रहे हैं कि शेयर बाजार कोई जुआ घर है तो आप बिल्कुल गलत सोच रहे हैं। यहां सोच समझकर लंबे समय के लिए एक टार्गेट लेकर अगर आप पैसे लगाएंगे तो कोई कारण नहीं कि आपको झटका लगेगा। मार्केट कैप और जीडीपी का अनुपात 130 प्रतिशत को पार कर गया है। बाजार इकॉनमी से कहीं आगे निकल गया है और यह चिंता का विषय है क्योंकि यह बता रहा है कि सेंसेक्स और निफ्टी अब ठोस जमीन पर नहीं खड़े हैं। ये कंपनियों के तीन साल आगे होने वाली कमाई को मानकर अभी से चल रहे हैं। ऊंचे वैल्यूएशन के अपने खतरे हैं और ऐसे में बाजार के धराशायी होने की आशंका बढ़ जाती है। अब हमारा शेयर बाजार उस ओर इशारा कर रहा है। मतलब साफ है कि तेजी से भागते बाजार में कभी भी ब्रेक लग सकता है और यह कभी भी गिर सकता है। यह गिरावट 10 से 25 प्रतिशत तक की हो सकती है। और इसके लिए निवेशकों को तैयार रहना चाहिए। हां, आप उन शेयरों को अभी बेचकर प्रॉफिट बुक कर सकते हैं जो काफी ऊपर चले गए हैं और जिनके गिरने का खतरा हो सकता है। लेकिन छोटे–मोटे तूफान आते रहेंगे, उनसे क्या डरना। अच्छी कमाई के लिए सब्र तो करना ही पड़ता है।

पैसे का प्रवाह जिसे लिक्विडिटी कहते हैं, बढ़ता ही जा रहा है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि सारी दुनिया में ब्याज दरें सबसे कम स्तर पर हैं। अमेरिका-यूरोप में तो ब्याज दरें शून्य या माइनस में ही हैं।

सस्ती ब्याज दरों का असर

मधुरेन्द्र सिन्हा।।

इस समय भारत ही नहीं, कई देशों के शेयर बाजार बुलंदियों पर हैं। हर दिन नया रेकॉर्ड। सिर्फ एक साल में ही बंबई शेयर बाजार का सूचकांक यानी संसेक्स 13 हजार से भी ज्यादा अंक बढ़कर 60,000 की रेकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया। छह साल पहले यह 30,000 पर था। जिन निवेशकों ने एक साल या उससे पहले पैसे लगाए थे, उनमें से ज्यादातर इस समय मालामाल हो चुके हैं। एक्सपर्ट्स दबी जुबान में ऐसी तेजी की बातें तो कह रहे थे, लेकिन उनमें से कोई भी आश्वस्त नहीं था कि बाजार यहां तक पहुंचेगा।

आज हालत यह है कि कई कंपनियों के शेयर दोगुने से भी ज्यादा बढ़ चुके हैं। इस बाजार ने सभी को कुछ न कुछ दिया जरूर है। भले ही अभी कुछ दिनों से मिड कैप के शेयर सुस्त पड़े हैं, लेकिन किसी समय निवेशकों ने उनमें भी चांदी काटी है। यानी माहौल कमाई का है और शेयर बाजार में बड़े–छोटे, देशी–विदेशी निवेशक लगातार आ रहे हैं। पैसे का प्रवाह जिसे लिक्विडिटी कहते हैं, बढ़ता ही जा रहा है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि सारी दुनिया में ब्याज दरें सबसे कम स्तर पर हैं। अमेरिका–यूरोप में तो ब्याज दरें शून्य या माइनस में ही हैं। विदेशी निवेशकों यानी एफआईआई के

लिए यह एक बढ़िया मौका रहा है। उन्होंने बड़े पैमाने पर निवेश किया है और करते ही जा रहे हैं। लगातार तीसरे साल में भी विदेशी निवेशकों ने 9 अरब डॉलर निवेश कर दिया है। वह यहां से कमा भी रहे हैं और लगा भी रहे हैं। उनके पास डॉलर की कोई कमी नहीं है और वे दुनिया भर के उभरते बाजारों पर नजरें गड़ाए हुए हैं। निवेश का कोई मौका वे जाने नहीं दे रहे। विदेशी एक्सपर्ट भारतीय शेयर बाजार को अभी महत्व दे रहे हैं। यह बात अलग है कि वे अचानक कब गायब हो जाएं, उसका पता नहीं। लेकिन अभी इसके आसार नहीं दिख रहे। अभी तो तेजी की गंगा बह रही है।

भारत में भी ब्याज दरें काफी कम हो गई हैं। बैंक तो तीन–साढ़े तीन परसेंट तक ही ब्याज दे रहे हैं। स्मॉल सेविंग्स की तमाम योजनाओं में अब काफी कम रिटर्न मिलने लगा है। रियल एस्टेट मंदी और ओवर सप्लाई के दौर से गुजर रहा है। सोने में भारी तेजी आई थी, हालांकि अब इसकी चमक थोड़ी धीमी पड़ी है। असल में कोरोना महामारी के कारण लोग घरों में बंद हो गए और उनके पास अतिरिक्त आय का कोई जरिया नहीं रहा। ऐसे में शेयर बाजार उनके काम आया। इसका नतीजा हुआ कि इसमें देसी निवेशकों की बाढ़ आ गई।

आज म्युचुअल फंडों और सिप के माध्यम से निवेशक बड़े पैमाने पर बाजार में पैसे लगा रहे हैं और उनमें लगभग 70 प्रतिशत ऐसे लोग हैं, जिन्होंने पहले स्टॉक मार्केट में कभी निवेश नहीं किया था। उधर, डीमैट अकाउंट खोलना आसान बनाकर सेबी ने भी लोगों को इस ओर आकर्षित किया है। इस साल ही नहीं पिछले साल भी लाखों नए डीमैट अकाउंट खुले हैं। सेबी के ही आंकड़ों के मुताबिक, पिछले साल अप्रैल से इस साल जनवरी तक एक करोड़ से भी ज्यादा डीमैट अकाउंट खुले। इस समय देश में सात करोड़ से भी ज्यादा डीमैट अकांउट खोले जा चुके हैं। नई टेक्नलॉजी और ऐप ने निवेश करना एकदम आसान बना दिया है। अब नए निवेशक लगातार पैसे लगा रहे हैं सीधे भी और म्युचुअल फंडों के जरिये भी। म्युचुअल फंड इंडस्ट्री अपने स्लोगन 'म्युचुअल फंड सही है' से लोगों को इस ओर आकर्षित करने में सफल हो रही है। आंकड़े बताते हैं कि शेयर बाजारों में बड़े पैमाने पर निवेश इनके जरिये ही हो रहा है।

सुडोकु नवताल- 5205

★★★★☆ कठिन

	8			6				
					5			
		9				7		3
	1			8				2
			7		4			
6				3			8	
5		7				4		
			8					
				1			6	

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

सुडोकु नवताल -5204 का हल

9	4	5	3	1	8	7	6	2
1	8	6	7	2	5	4	9	3
2	7	3	9	4	6	8	1	5
6	3	9	1	7	4	2	5	8
5	2	4	8	9	3	6	7	1
7	1	8	6	5	2	9	3	4
4	6	7	5	8	1	3	2	9
8	9	1	2	3	7	5	4	6
3	5	2	4	6	9	1	8	7

अपना ब्लॉग: इतिहास, संस्कृति और सभ्यता का एक अनमोल पड़ाव

मोहन। साबरमती आश्रम हमारी ऐतिहासिक धरोहर है। यह आश्रम देश के इतिहास, संस्कृति और सभ्यता का एक अनमोल पड़ाव है। इसकी दीवारों पर एक गरीब देश के दुर्बल व्यक्ति के मानवीय सम्मान, अधिकार और गरिमा के लिए संघर्ष की जो गाथा बिंधी है, उसको आश्रम के रूपांतरण के बाद कैसे सुना और पढ़ा जा सकेगा! किसी भी देश का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। क्या हम इतिहास की विरासत के इन अभिलेखों को हमेशा के लिए मिटा देंगे? क्या वह केवल किस्से–कहानियों में सिमट कर रह जाएगी? गांधी को जानने–समझने–गुनने की आकांक्षा के साथ साबरमती आश्रम आने वाले हर आगंतुक को यहां के स्मारक अपने समय की गाथा सुनाते हैं। वे बताते हैं कि एक गरीब देश के मामूली इंसान की गरिमा स्थापित करने के लिए औपनिवेशिक काल में विपरीत परिस्थितियों के बावजूद कैसे बलिदान और त्याग का कठिन सफर तय किया गया। यह मुकाम हासिल करने के लिए गांधी ने सत्याग्रह का नया प्रयोग किया और मामूली इंसान को उसका अधिकार दिलाने के लिए विश्व के समक्ष एक विकल्प प्रस्तुत किया।